ANUBHAVS

दु:खियों के दु:ख बापू हरेगा

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

manasamarthyadata.com

– एस. बी. खांबेकर

सन २००२ में मेरे घर पर मेरा एक बापूभक्त रिश्तेदार आया और मुझसे कहने लगा कि मुझे जुईनगर स्थित 'हरि ॐ' नामक इमारत बता दो । यद्यपि मैं उस समय बापूजी के सत्संग में नहीं था ,फिर भी मुझे जुईनगर की उस इमारत के बारे में कुछ कुछ पता था । अतः मैं, मेरी पत्नी और वे गृहस्थ मिलकर तीनों उस इमारत की ओर चल पड़े । उस इमारत को दिखाने के बहाने हमारे पैर भी उस गुरुकुल में पड़े और उसी दिन से मुझे बापूजी के प्रति जिज्ञासा होने लगी । मैं अपने नजदीक के उपासना केंद्र पर भी जाने लगा। बापूजी द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते चलते ऐसा विश्वासपूर्ण आभास होने लगा कि चाहे अन्य कोई हो या न हों, मेरे बापूजी मेरे संकटों में सदैव मेरे साथ रहनेही वाले हैं। ऐसा ही अनुभव मुझे मेरे भाई के बारे में आया ।

वाशी उपासना केंद्र की ओर से ३० जून २००३ के दिन शाम ५.०० बजे कांदा-बटाटा मार्केट, तुर्भे, नयी मुंबई में बापूजी की 'महिमा-कथन' का कार्यक्रम आयोजित किया गया था । वहाँ पर बापूभक्तगण एकत्रित लोगों को बापूजी के बारे में जानकारी दे रहे थे। शाम के लगभग साढ़े सात बजे थे, तभी मेरे मोबाईल पर घर से फोन आया । घर के लोगों ने कहा कि,''तुम फौरन घर आ जाओ । गांव में आपका भाई दुर्घटनाग्रस्त हो गया है । उसकी मोटरसाईकिल को ट्रक ने टक्कर मार दी है ।''

मैं तुरंत घर आ गया और अकेले ही गांव जाने के लिए निकल पड़ा । गांव के अस्पताल में भाई का इलाज शुरु था। उस समय भाई की पत्नी और बेटी वहीं पर थे । जब मैं वहाँ पहुँचा तो उन्होंने सारी घटना की जानकारी दी । परंतु उसमें एक विचित्र बात यह बतायी कि दुर्घटना के बाद भाई रास्ते पर पडा था । उसीने एक राहगीर से प्रार्थना की कि मेरे घर पर फोन करके घर के लोगों को दुर्घटना की जानकारी दे दो । उसके मुताबिक वो अनजान व्यक्ति हर पाँच-दस मिनट में फोन करके बारम्बार घर के लोगों से कहा रहा था कि,''मैं यहाँ हूँ, यदि तुम्हें कुछ सहायता की आवश्यकता हो तो मुझसे इसी मोबाईल पर संपर्क करो ।'' इसके अलावा वो अन्य उपयोगी जानकारियाँ भी दे रहा था । यह सब सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ और मन में कोतूहल होने लगा कि ऐसा कौन अजनबी व्यक्ति है जो बिना किसी जान-पहचान के ही इतना समय बर्बाद करके मेरे भाई की सहायता कर रहा है। परंतु बाद में उस व्यक्ति का कोई पता ठिकाना नहीं मिला।

उसके आठ-दस दिन बाद जब मैं घर वापस आया तो सहज ही एकबार डॉ.नर्सीकर , प्रमुख-सेवक , वाशी केंद्र, को यह घटना बतायी और उनसे ही यह प्रश्न किया कि आखिर कौन ऐसा व्यक्ति हो सकता है कि जो मेरे भाई के लिए फोन पर इतना सब करेगा ? उस समय उन्होंने ही मुझसे प्रतिप्रश्न करते हुए पूछा कि,''फिर तुमने बापूजी को क्या पहचाना ?'' तभी मेरे दिमाग में प्रकाश पड़ा कि आगे-पीछे का कुछ भी पता न होते हुए भी मद्द करनेवाला व्यक्ति मेरे ''बापूजी'' के सिवा और कौन हो सकता है ? उसके बाद से तो बापूजी के प्रति लगाव और भी बढ़ गया।

उस समय मेरे सिर पर आर्थिक भार भी काफी था । उसका निपटारा करते करते पागल होने की स्थिति आ गयी थी । उस समय अक्षरशः मुझे बापूजी ने ही संभाला और इसीलिये मैं उससे बाहर निकल सका अन्यथा मेरी क्या दशा हुयी होती यह न बताना ही उचित होगा । प्रत्येक संकट के समय मैंने बापूजी को ही गुहार लगायी और बापूजी ने ही, मेरी भक्ति नगण्य होते हुये भी, मुझे हर बार संकटों से उबारा । अब तो आर्थिक संकट भी समाप्त हो चुका है । यह लीला सिर्फ मेरे बापूजी की ही है ! ऐसा सद्गुरु हमें प्रत्येक जन्म में मिले, उनके चरणों में यही प्रार्थना है ।

ANUBHAVS

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

manasamarthyadata.com